शोध–प्रारूप

नागपुरी कथा साहित्य में आदिवासी जीवन और संस्कृति (झारखण्ड के संदर्भ में)

राँची विश्वविद्यालय, राँची की पीएच0डी0

उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध–प्रारूप

स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग

संकाय : जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

वर्ष –2024

शोध निर्देशक

(मनय मुंडा)
विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर मुण्डारी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

(सुष्मा कच्छप)
यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ.
स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

1. भूमिका :

आदिकाल से ही आदिवासी समुदाय दुनिया की विभिन्न क्षेत्रों में रहते आ रहे हैं। यदि भारत की कुल जनसंख्या में आदिवासियों का प्रतिशत देखा जाय तो पूरे जनसंख्या का तकरीबन आठ फीसदी है। झारखंड में अमूमन 27 फीसदी हैं और 32 आदिवासी समुदाय हैं, जिनमें कई आदिम जनजातियां भी पहाडिया शामिल हैं यथा – असुर, बिरहोर, किसान, पहड़िया, बृजिया, कोरबा आदि प्रमुख हैं। वहीं आदिवासी समुदायों में मुख्य रूप से संथाल, मुंडा, हो, उरांव, खड़िया आदि हैं। इन समुदायों की सदियों से अपनी एक अलग जीवन शैली, परंपरा और संस्कृति रही है। इनकी इन परंपराओं की चर्चा इनकी लोकगीतों और दंतकथाओं में आज भी जीवित है।

कालान्तर में कुछ विद्वानों, लेखकों, साहित्यकारों ने इनकी उन परंपराओं को अपनी लेखनी के माध्यम से समाज के सामने लाने का काम किये हैं। परन्तु जिस गति व पैमाने के साथ काम होना चाहिए, नहीं हो पाया है। नागपुरी कथा साहित्य में भी जिस तरह से आदिवासी समाज के उपर काम होना चाहिए था, वह नहीं हो पाया है। समाज के इस सबसे सशक्त, समृद्ध और आदिम गणराज्य के नागरिक समुदाय की अनदेखी औपनिवेशिक समय से ही हो रही है। अकूत प्राकृतिक संसाधनों के मालिक रहे आदिवासी समुदाय के औपनिवेशिक शोषण–दमन में कोई ढील नहीं आयी है। स्वतंत्र भारत में वे आज भी कानून, धनबल और राजनीतिक आथिर्क ताकत के सहारे कुचले जा रहे हैं। हालांकि दमन और औपनिवेशिक लूट के खिलाफ हो रहे आदिवासी प्रतिरोध ने राज्य सत्ता को कई बार पीछे हटने पर मजबूर किया है, जिसके फलस्वरूप आदिवासी हित के नये कानून बने, कल्याणकारी कार्यक्रमों की शुरुआत हुई और अनेक विकासीय परियोजनाओं की पहल की गई, परन्तु इससे भी उनके अधिकारों की बहाली और विकास का सवाल हल नहीं किया

जा सका, बल्कि हुआ यह कि विकास परियोजनाएं और कल्याणकारी कार्यक्रम लूट का एक और नया क्षेत्र बन गई।

यह एक शोध का विषय जरूर है कि आदिवासी जीवन सबसे पहले किसके लेखन में आया। उन पर कोई कहानी या उपन्यास किस सन् में लिखी गयी। आदिवासी कितने तरह के हैं, वगैरह–वगैरह। महत्वपूर्ण यह है कि उन पर क्या लिखा गया। लिखने वाले भी मोटामोटी तीन तरह के लोग हैं। पहले वे हैं जिन्होंने सिर्फ कथ्य के बतौर आदिवासी जीवन पर लिखा है। दूसरे वे हैं जो आदिवासी अस्मिता के समथर्क हैं और उनके राष्ट्रीयता के संघर्ष को वर्गीय दृष्टिकोण से देखते हैं। तीसरा, स्वयं आदिवासी समुदाय है। आदिवासी समुदाय में भी कई तरह का लेखन है। एक लेखन तो वह जो मुख्यधारा के हिन्दू या ईसाई संस्कृति के प्रभाव में हो रहा है जबकि दूसरा वर्ग आदि मानसिकता से रचना करने वालों का है। नागपुरी कथा साहित्य में चित्रित आदिवासी जौवन दर्शन पर बात करने के लिए लेखकों, रचनाकारों की इन भिन्न–भिन्न सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक बुनावट को समझना नितांत जरूरी है। वैसे भी नागपुरी कथा साहित्य में आदिवासी जीवन–समाज के चित्रण पर अभी तक कोई अध्ययन नहीं हुआ है, इसलिए यह एक दुरुह और चुनौतीपूर्ण कार्य है।

नागपुरी के अनेक समर्थ कहानीकारों एवं उपन्यासकारों ने कम ही सही लेकिन आदिवासी समाज को अपने लेखन का विषय बनाया है। तीनों तरह के लेखन में एक बड़ी संख्या उन लेखकों की है जो नागपुरी साहित्य में अब तक अछूते रहे आदिवासी साहित्य लेखन का चैंपियन घोषित कर सकें। ऐसे लेखक कुछ जानकारियां और सूचनाएं भर इकट्ठा करते हैं और कहानी लिख डालते हैं, उनके स्रोत वैसे लेख या किताबें होती हैं जो नितांत अकादमिक और अखबारी ढंग से लिखे गये हैं। इसलिए वे उस सांस्कृतिक जीवन को पकड़ ही नहीं पाते, जो कि

किसी की अंतरधारा होती है, फिर संस्कृति का अर्थ उनके लिए सिर्फ नाच–गान, आदिम परंपराएं, अंधविश्वास, रीति–रिवाज, उनकी अल्हड़ मस्ती और जीवनदर्शन उनकी रचनाओं में एकसिरे से अनुपस्थित रहता है। लोकगीत की कुछ पंक्तियाँ और चंद आदिवासी शब्दों का प्रयोग किसी रचना को आदिवासी संस्कृति से संपृक्त कर देगा, यह जरूरी नहीं है।

आदिवासी जीवन दर्शन के निरूपण में सबसे बड़ा प्रश्न लेखक की वैचारिकता का है। लेखक की जो विचारभूमि होगी, वह जिस वर्ग से आता है, उसकी रचनाएं उससे बाहर नहीं हो सकतीं। यही कारण है कि बहुत सहानुभूति के बावजूद लिखी गई रचनाओं में हम उनका वर्गीय दृष्टिकोण और वह औपनिवेशिक मानसिकता साफ–साफ देख सकते हैं, जिसके खिलाफ आदिवासी समाज लगभग तीन सौ सालों से अनवरत संघर्षरत है।

किसी भी समाज की संस्कृति उसकी आर्थिक संरचना और उसके उत्पादन संबंधों से निर्मित एवं निर्दिष्ट होती है। ऐसे में जाहिर है कि प्रकृति आधारित, सामुदायिक एवं सामूहिक, सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था में जी रहे आदिवासी समाज की संस्कृति व्यक्तिवादी मुख्यधारा के हिन्दी समाज से भिन्न होगी, दरअसल लेखक अपने समाज की संस्कृति और वर्गीय विचार से उन्हें देखता है और तब उसे लगता है अरे! ये तो असभ्य हैं। अशिक्षित हैं! अधंविशवास के आदिम युग में जी रहे हैं।

पिछले दो दशकों की अवधि में नागपुरी संसार में आदिवासी लेखकों की पैठ और पहचान की बात है, तो बेहिचक बताया जा सकता है कि लेखन– प्रकाशन की बहुमुखी हलचलों के बूते झारखंड क्षेत्र की प्रतिभाओं के पंख खुले हैं और कई समर्थ संभावनाओं की उपलब्धियों को प्रशंसा भी मिली है। आज तारीख में आदिवासी

कलम की कथाकृतियां कई अर्थों में विशेष ध्यान दिये जाने की हकदार हैं। यह नजरअंदाज करने योग्य बात नहीं है कि अभी यहां गढ़ा जा रहा कथावितान अनगढ़ खुरदरेपन की गिरफ्त में पड़ा भले दिखे और नतीजतन वहां कलात्मक बारीकियां भी कम मिलें, लेकिन आदिवासी सदान नागपुरी लेखकों की खास अहमियत इस कारण अर्थपूर्ण है कि इनकी मार्फत सदियों से कोहराच्छन्न एक बड़ी आबादी के जीवन मूल्य, जीवन शैली और अस्तित्व का संघर्ष पूरी दुनियां के सामने आ रहा है। बेशक अभी इनका कथ्य इनके आसपास का समाज जीवन है, मगर उम्मीद है कि कल इनमें से कुछ लेखक भारतीय समाज की समग्र कथाभूमि में भी अपनी गहरी पैठ बना लेंगे।

2. साहित्य अवलोकन (पूर्व में किए गए शोध/आलोचना कार्यों का विवरण) :

यदि गौर किया जाय तो आदिवासी समुदाय पर छिटपुट ढंग से काम हुए तो जरूर हैं किन्तु समेकित ढंग से नहीं हुआ है। जिन्होंने भी अभी तक काम किया है उनकी रचनाएं चर्चित नहीं हुई है।

3. अनुसंधान का उद्देश्य एवं महत्व (प्रासांगिकता, वतर्मान परिप्रेक्ष्य में) :

मैं मूल रूप से झारखंड प्रांत के आदिवासी बहुल जिला रांची की रहने वाली हूँ। मेरा जन्म व लालन–पालन आदिवासी परिवार व समुदाय के बीच हुआ है। मैं खुद आदिवासी हूँ। चूंकि अब तक इस विषय पर सम्यक रूप से काम नहीं हुआ है, इसलिए भी यह जरूरी है कि आदिवासी समाज एवं संस्कृति के उपर लिखे गये बातों को प्रमुखता के साथ समाज के सामने लाना ताकि मुख्यधारा का समाज इनसे रू–ब–रू हो सके। यह शोध अनछुए पहलुओं के संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में एक पहल होगी। मेरे लिए सृजनात्मक सोच की चुनौति एक सुखद अनुभूति होगी। कला एवं भाव पक्षों को करीब से जाननेका काम होगा। इन्ही सारी बातों से प्रेरित

होकर 'नागपुरी कथा साहित्य में आदिवासी जीवन और संस्कृति' (विशेष संदर्भ झारखंड) विषय पर पीएच०डी० रिसर्च के लिए जरूरी एवं उपयुक्त लगा।

4. शोध अभिकल्य (किस प्रकार का शोध होगा और शोध को पूरा करने में किन–किन साधनों का उपयोग करना होगा।) :

शोध के लिए निम्नलिखित विधियों को आधार के रूप में रखा जायेगा :

(क) क्षेत्रीय अध्ययन/सर्वेक्षण, क्षेत्रीय स्तर पर पत्र–पत्रिकाओं का अध्ययन, सर्वेक्षण, साक्षात्कार पद्धति, प्रश्नावली पद्धति, व्यक्तिगत संपर्क, खोज, सामूहिक स्तर पर आलोचनात्मक तथा तुलनात्मक पद्धति ।

(ख) संदर्भ ग्रंथ/साहित्य का अध्ययन एवं अध्ययन शोध कार्य परिष्कृत रूप में हो इसके लिए भाषा साहित्य का अध्ययन, समाचार पत्र–पत्रिकाएं, विविध पुस्तकें, लेख–आलेख, जिला गजेटियर आदि।

(ग) भाषाविद्, साहित्यकारों, विद्वानों, पत्रकारों, संपादकों आदि से विचार– विमर्श अपेक्षित होगा।

शोध उपकरण :

- टेपरिकाडर्र
- नक्सा
- वेबसाइट/इंटरनेट
- चित्र
- प्रश्नावली
- कैमरा
- कम्प्यूटर।

5. अनुसंधान की परिकल्पनाएं :

साहित्य समाज का सूर्य पूंज है। इसकी उत्पत्ति का पता लगाना सहज नहीं। लेकिन यह अनुमान लगाया जा सकता है कि जहां वेदना, संवेदना, सौंदर्य, करूणा, क्रोध आदि का भाव उत्पन्न हुआ होगा वहीं साहित्य का सृजन हुआ होगा। इस भाव

की अनुभूति सृष्टिकाल से ही हम कह सकते हैं। नदियों, पहाड़–पवर्तों, जंगलों, धरती–गगन, पशु–पक्षी वगैरह सभी सजीव–निजीर्व इस साहित्य में मानव के भावों के साथ कहीं न कहीं समाहित होते गये होंगे। लेकिन प्रत्येक कालखंडों में साहित्य के शिल्पों के रूप अलग–अलग रहे होंगे। प्रत्येक युग के साहित्य सृजन के मन में अलग–अलग स्थितियाँ– परिस्थितियाँ, वेग–आवेग, कथा शिल्प वगैरह रहे होंगे। हिन्दी कथा साहित्य में जनजातीय जीवन दर्शन के उत्थान–पतन के इतिहास को संग्रहित करना। साहित्य के मर्मों को स्थापित करना। एक खोज करना जो नागपुरी कथा साहित्य में जनजातीय जीवन दर्शन के विभिन्न पहलुओं को गंभीरता पूर्वक प्रस्तुत कर सके।

6. विषयानुक्रमणिका (अध्यायक्रम) :

प्रथम अध्याय :

1. भूमिका
2. आदिवासी की परिभाषा
3. आदिवासी समाज एक परिचय
4. आदिवासी समाजों की समस्याएं
5. आधुनिक समाज और आदिवासी समाज में सांस्कृतिक परिवर्तन।

द्वितीय अध्याय :

नागपुरी कथा साहित्य की विकास यात्रा

1. नागपुरी कथा साहित्य का उद्भव और विकास
2. नागपुरी कथा साहित्य में विकास विन्यास
3. नागपुरी कथा साहित्य के प्रमुख रचनाकार और रचनाएँ

तृतीय अध्याय :

नागपुरी कथा साहित्य में आदिवासी जीवन और संस्कृति

1. लोक कथा
2. शिष्ट कथा

चतुर्थ अध्याय :

नागपुरी उपन्यास में आदिवासी जीवन और संस्कृति (मौलिक उपन्यास और अनूदित उपन्यास)

1. चकरी
2. संकर गोटेक जिनगी
3. दखल दहानी
4. सरई–गाढ़ा
5. सातो नदी पार
6. पुगरी
7. ग्लोबल गाँव कर देवता (अनूदित)

पंचम अध्याय :

नागपुरी नाथक साहित्य में आदिवासी जीवन एवं संस्कृति

1. नाटक

क) ठाकुर विश्वनाथ शाही

ख) मारंग गोमके

ग) मदरा मुंडा

घ) अखरा निदाय गेलक

2. रेडियों नाटक

क) तेतइर कर छाई

ख) रेडियों ले दू गो नाटक

षष्ट अध्याय :

नागपुरी कथा साहित्य में आदिवासी समाज के वैशिष्ट्य का चित्रण

1. समाज की दशा–दिशा
2. सामाजिक विकास की प्रेरणा

उपसंहार / शोध निष्कर्ष

परिशिष्ट :

1. आभार ग्रंथ सूची

2. संदर्भ ग्रंथ सूची

नोट : शोध कार्य के समय आवश्यकतानुसार शोध प्रारूप में आंशिक–परिवर्तन किया जा सकता है।

शोध निर्देशक	शोधार्थी
(मनय मुंडा) विभागाध्यक्ष स्नातकोत्तर मुण्डारी विभाग राँची विश्वविद्यालय, राँची	**(सुष्मा कच्छप)** यू.जी.सी. नेट / जे.आर.एफ. स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग राँची विश्वविद्यालय, राँची

आधार ग्रंथ सूची :

क्र.	लेखक	रचना	प्रकाशक	वर्ष
1	अनुज, डॉ. भुवनेश्वर	नागपुरी लोककथा साहित्य	भुवन प्रकाशन, साहू, टोली, बहु बाजार, राँची	2004
2	अनुज, डॉ. भुवनेश्वर	नागपुरी लोक साहित्य	भुवन प्रकाशन साहू, टोली, बहु बाजार, राँची	1992
3	कंडुलना, जोसेफ	छोटानागपुर के आदिवासी	Diocesan Pasrtoral Centre Torpa Road khunla, khunti	2015
4	गोंझू, डॉ. गिरिधारी राम	मारंग गोमके	पझरा प्रकाशन, नागपुरी प्रचारिणी सभा, राँची	2003
5	डुंगडुंग, डॉ. जोवाकीम	आदिवासी मूलवासी सदान और गैर–मूलवासी संस्कृति एक अवलोकन	झारखण्ड झरोखा, रातू रोड, राँची	2020
6	प्रसाद, डॉ. राम	स्वतंत्र्योत्तर नागपुरी साहित्य एक अध्ययन	झारखण्ड झरोखा, रातू रोड़, राँची	2000
7	मिश्रा, शकुंतला	सातो नदी पार उपन्यास	झारखण्ड झरोखा, रातू रोड, राँची	2011

8	राय, प्रफुल्ल कुमार	संकर गोटेक जिनगी नागपुरी उपन्यास	नागपुरी भाषा परिषद्	2013
9	साहू, पंचम	दखल दहानी (नागपुरी उपन्यास)	झारखण्ड झरोखा, रातू रोड, राँची	2016

संदर्भ ग्रंथ सूची

क्र.	लेखक	रचना	प्रकाशक	वर्ष
1	अनुज, डॉ. भुवनेश्वर	नागपुरी लोक साहित्य	जय भारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद	1992
2	केशरी, डॉ. विसेश्वर प्रसाद	झारखण्ड के इतिहास	नागपुरी संस्थान, पिठोरिया, राँची	2014
3	केशरी, डॉ. विसेश्वर प्रसाद	मैं झारखण्ड में हूँ	छोटानागपुर प्रकाशन केंद्र, श्रद्धानांद रोड, अपर बाजार, राँची	1993
4	केशरी, डॉ. विसेश्वर प्रसाद	छोटानागपुर का इतिहास	नागपुरी संस्थान, पिठोरिया, राँची	1979
5	केशरी, डॉ. विसेश्वर प्रसाद	साहित्य के तत्व और आयाम	कमल प्रकाशन, कोतवाली रोड, राँची	1971
6	केशरी, डॉ. विसेश्वर प्रसाद	नागपुरी भाषा और साहित्य	कमल प्रकाशन, कोतवाली रोड, राँची	1971
7	केशरी, डॉ. विसेश्वर प्रसाद	नागपुरी भाषा उद्गम और विकास	नागपुरी संस्थान, पिठोरिया, राँची	2000
8	प्रसाद, डॉ. राम	स्वातंत्रोंत्यर नागपुरी साहित्य	झारखण्ड झरोखा, राँची	2014
9	गोस्वामी, डॉ. श्रवण कुमार	नागपुरी शिष्ट साहित्य	रिसर्च प्रकाशन, दिल्ली	1992
10	राय, गुलाब	काव्य के रूप	आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली	2012
11	तिवारी, योगेंद्र नाथ	नागपुरी भाषा का संक्षिप्त और साहित्य	कमल प्रकाशन, कोतवाली रोड, राँची	1971
12	डॉ. सतेन्द्र	लोक साहित्य–स्वरूप एवं सर्वेक्षण	भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर	1982

पत्र–पत्रिकाओं की सूची :

1. गोतिया– दुमसा टोली, चुटिया, राँची।
2. साहिया – एम.जी. टावर, 23पूर्वी जेल रोड, राँची।
3. डहर– छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ।
4. संगम–आई.टी. पब्लिकेशन, कोकर, राँची।
5. राँची एक्सप्रेस– अपर बाजार, राँची।
6. आज– सामालोंग, राँची।
7. प्रभात खबर – कोकर, राँची।
8. हिंदुस्तान–कोकर, राँची।
9. दैनिक जागरण– कोकर, राँची।
10. दैनिक भास्कर– रातू रोड, राँची।
11. सन्मार्ग– हरमु रोड, राँची।
12. आदिवासी– बिहारी सरकार, राँची।
13. नागपुरी–वी / 206 जगन्नाथपुर, राँची।
14. छोटानागपुर एक्सप्रेस– ढुमसा टोली, चुटिया, राँची।